भाग–1

बाल परामर्श
(बुनियादी समझ)

Child Counselling
(Basic Understanding)

रिसोर्स इंस्टिट्यूट फॉर ह्यूमन राइट्स (आर.आई.एच.आर.)

RIHR Resource Institute for Human Rights

unicef for every child

मार्गदर्शन :

संजय निराला
बाल संरक्षण विशेषज्ञ, यूनिसेफ, राजस्थान

अंकुश सिंह
संचार विशेषज्ञ, यूनिसेफ, राजस्थान

परिकल्पना एवं निर्देशन :

गोविन्द बेनीवाल
पूर्व सदस्य, राज. राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग

संपादन :

मनीष सिंह
राज्य संयोजक, राज. बाल अधिकार संरक्षण साझा अभियान

विजय गोयल
महासचिव, आर.आई.एच.आर.

लेखन :

सुश्री पल्लवी शर्मा (परामर्श मनोवैज्ञानिक)
सुश्री युथिका चटर्जी (परामर्श मनोवैज्ञानिक)

प्रकाशन :

आर.आई.एच.आर.

सहयोग :

यूनिसेफ, राजस्थान

आवरण एवं बुक डिजाईन :

उमाशंकर शर्मा
व्यू पॉईन्ट ग्राफिक्स, जयपुर

मुद्रण :

कल्पना ऑफसेट प्रिन्टर्स, जयपुर
7665999933

नोट : यह मार्गदर्शिका बाल परामर्श विषय पर समझ बनाने के लिए बनाई गई है। इस मार्गदर्शिका में दी गई जानकारी का उपयोग कानूनी दस्तावेज के रूप में ना करें।

बाल परामर्श : भाग–1

(बुनियादी समझ)

Child Counselling : Part - 1

(Basic Understanding)

प्रस्तावना
Preface

किसी को भी परामर्श देना अपने आप में वैचारिक व व्यवहारिक क्रिया है जिसमें बहुत सी बातों का ध्यान रखने की आवश्यकता होती है। बच्चों के संदर्भ में देखा जाये तो परामर्शदाता यह प्रयास करता है कि वह बच्चे को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप ये सहायता प्रदान करे ताकि उसके अन्दर उत्पन्न हो रहे नकारात्मक भाव व विचारों को समझकर उसे सकारात्मक मार्ग की ओर प्रशस्त कर सके है।

बच्चों को परामर्श देते समय सबसे पहले बच्चे के मन को समझना आवश्यक है, साथ ही उसके अन्दर चल रहे विचारों को समझना जरूरी है। किशोर न्याय (बालकों की देखरेख और संरक्षण) अधिनियम, 2015 एवं लैंगिक अपराधों से बालकों का संरक्षण अधिनियम, 2012 में विभिन्न परिस्थितियों में आने वाले बच्चों के लिए बाल परामर्श को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

आर.आई.एच.आर. लम्बे समय से विषम परिस्थितियों में बच्चों की सुरक्षा के मुद्दों पर काम कर रहा है। संस्था द्वारा विगत समय में यह पाया गया कि बच्चों के साथ परामर्श को समझने एवं परामर्श करने के लिए कोई सरल दस्तावेज नहीं है जिसके आधार पर क्रमबद्ध तरीके से परामर्श का कार्य किया जा सके। इस क्रम में यह प्रयास किया गया कि बच्चों के साथ परामर्श का कार्य करने के लिए एक मार्गदर्शिका को तैयार किया जाये।

यह मार्गदर्शिका स्वयंसेवी संस्थाओं, संगठनों, बाल गृहों के साथ जुड़े सामाजिक कार्यकर्ता, परामर्शदाता, शिक्षक इत्यादि के लिए उपयोगी साबित होगी।

अनुक्रमणिका

1. परिचय 3

(Introduction)

2. बच्चा कौन है? 4

(Who is a Child?)

3. बाल परामर्श क्या है? 5

(What is Child Counselling?)

3.1 परामर्श की मूल बातें

3.2 बाल परामर्श का महत्व

3.3 बच्चों से जुड़े मुद्दे

– व्यवहारिक परिवर्तन

– शैक्षणिक चिंताए

– पारिवारिक मतभेद

– नकारात्मक आदतें

–परित्याग

– दत्तक ग्रहण और पालन–पोषण

– शोषण

– अपराध में संलिप्तता

4. बाल परामर्श में परामर्शदाता की भूमिका 9

(Role of Counsellor in Child Counselling)

5. परामर्श में पूछेजाने वाले प्रश्नों के प्रकार 10

(Types of Questions asked in Counselling)

– ओपन एंडेड प्रश्न (Open-ended Questions)

– क्लोज़ एंडेड प्रश्न (Close-ended Questions)

6. परामर्शदाताओं का प्रशिक्षण 11

(Training of Counsellors)

7. परामर्शदाता : क्या करें क्या ना करें 12

(Counsellor : Do's and Don'ts)

✍ कविता : बच्चे 14

परिचय
Introduction

मनुष्य अपने जीवन में बहुत से काम व कौशल सीखता है, समझता है और अलग–अलग जगह से ग्रहण करता है। इन्हीं में वह सीखता है समाज में रहना, रिश्तों का अर्थ, खेलना–कूदना, चलना–बोलना एवं पढ़ना आदि। सीखने की प्रक्रिया में मनुष्य स्वयं व दूसरों के साथ विचारों का आदान–प्रदान व कार्यों का विश्लेषण करने लगता है। इसी प्रकार अपनी पसंद व समझ के अनुसार वह निर्णय भी लेने लगता है। मगर कोई भी मनुष्य सबसे स्वछन्द रूप से अगर दुनिया को देखता है या प्रयोग करता है, तो वो समय होता है, उसका बचपन। बचपन में हुए अनुभवों की छाप मनुष्य पर जीवन भर दिखाई देती है।

बचपन जीवन का एक ऐसा समय है जिसे बहुत से मनुष्य फिर से जीना चाहते हैं। किसी खेलते बच्चे को देख अपनी बीती स्मृतियों को याद करते हैं या उन्हीं के साथ बच्चा बनकर अपना बचपन फिर से जी उठते हैं। मगर आज के समय में जहाँ अपराध की दर इतनी बढ़ गई है वहीं बच्चों के साथ भी कुछ ऐसी दर्दनाक घटनाएँ घट रही हैं जो केवल उनके बचपन को ही नहीं अपितु उनके आने वाले जीवन को भी आहत कर रही हैं। इसके चलते समाज में भय का वातावरण बनता जा रहा है और इसी कारण से बच्चे घरों से बाहर कम व घरों में कैद ज्यादा दिखाई देने लगे हैं। इस विषय को और गहराई से जानने–समझने के लिए सबसे पहले हमें बच्चे व उसके बचपन को समझना होगा।

बच्चा कौन है?
Who is a Child?

हमने अपने घर–आंगन, आस–पड़ोस, स्कूल एवं खेल के मैदानों में बच्चों को तरह–तरह के खेल खेलते एवं अठखेलियाँ करते देखा होगा। वैसे तो कहा जाता है कि बच्चा खाली स्लेट की तरह होता है जिस पर कुछ भी लिखा जा सकता है जबकि वास्तव में बाल मन की जिज्ञासा उसे करके सीखने के लिए प्रेरित करती है और भिन्न प्रकार के अनुभवों से गुजरते हुए उसके सीखने की यात्रा निरन्तर चलती रहती है।

बच्चा खेलता–कूदता है, कल्पनाएँ करता है और उन कल्पनाओं से अपनी अलग ही दुनिया बुन लेता है। उसकी दुनिया में हँसता सूरज, सोता चाँद, नीला पेड़ या गुलाबी नदी कुछ भी हो सकता है। बच्चा ज़मीन–दीवार, खिड़की–दरवाज़े, कागज़–पत्थर, मिट्टी–पानी आदि सभी को वह खेलने का माध्यम बना लेता है तथा कई बार चखकर भी देखता है।

बच्चे का मन बहुत कोमल व चंचल होता है। वह हर व्यक्ति पर जल्दी ही भरोसा कर लेता है और दूसरों के साथ निश्च्छल भाव से घुल–मिल जाता है। भावनाओं से ओत–प्रोत बच्चा एक टॉफी मिलने की खुशी या मन पसन्द खिलौना खो जाने की परेशानी पर पूरी दुनिया सर पर उठा लेता है।

बाल्यावस्था से किशोरावस्था तक की यात्रा को हम सब बचपन कहते हैं। कानूनी भाषा में भी 18 वर्ष से कम उम्र का व्यक्ति बच्चा कहलाता है तथा 18 वर्ष पूर्ण करने के बाद ही वह वयस्क माना जाता है। देखा जाए तो सही मायने में बच्चों को हम उनके रूची–रूझान, प्रकृति–प्रवृत्ति एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से ही समझ सकते हैं।

बाल परामर्श क्या है ?
What is Child Counselling?

बाल परामर्श बच्चे के दिमाग का आकलन करने और समस्या का पता लगाने की एक प्रणाली है। भावनात्मक या मानसिक संकट से जूझ रहे बच्चे के लिए यह महत्वपूर्ण है। यह प्रणाली छोटे बच्चों के साथ–साथ किशोरों को भी विभिन्न मनोवैज्ञानिक और मानसिक समस्याओं का समाधान करने में मदद करती है। भावनात्मक आघात, जो उनकी कार्यक्षमता को बाधित कर रहे हैं, उन्हें दूर करने में यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। फिर वजह चाहे दुःख, तनाव पूर्ण वातावरण या कोई अप्रिय घटना ही क्यों न हो? यहाँ पर बाल परामर्शदाता उन्हें हर मुश्किल घड़ी से बाहर निकलने में सहायता करते हैं।

3.1 बाल परामर्श की मूल बातें :

- बाल परामर्श करने के लिए सबसे अधिक जरूरी है बच्चे के मन को समझना तथा उसके वातावरण की जानकारी रखना।
- बाल परामर्श की प्रक्रिया में बच्चे, माता–पिता, उनके स्कूल का वातावरण, उनका स्वभाव, आदतें, पसंद–नापसंद और साइकोमैट्रिक परीक्षणों का आकलन शामिल है। यह समस्या की पहचान करने और उसका बेहतर समाधान प्रदान करने में मदद करता है।
- बच्चे के साथ–साथ माता–पिता की भी काउंसलिंग की जाती है, ताकि उन्हें अपने बच्चे की समस्या को दूर करने के सुझाव दिए जा सकें।
- बच्चों को अप्रत्यक्ष परामर्श भी दिया जाता है, जहाँ उन्हें शामिल करने और उनकी समझ और व्यवहार को समझने के लिए विभिन्न गतिविधियों का संचालन किया जाता है।

- सकारात्मक व्यवहार को बढ़ावा देने और नकारात्मक व्यवहार को कम करने के लिए सकारात्मक माहौल बनाया जाता है ताकि वे आसानी से और शीघ्रता से उन मुश्किलों का सामना कर सकें।
- बाल परामर्शदाता का एकमात्र उद्देश्य बच्चे को तनाव या आघात की स्थिति से आसानी से बाहर निकालना है। वह हर संभव समस्या का समाधान करने की कोशिश करता है, ताकि बच्चा आम बच्चों की तरह एक सामान्य जिंदगी जी सके।

3.2 बाल परामर्श का महत्व

बच्चों का मन और दिमाग बहुत नाजुक होता है, जो किसी न किसी कारण से आसानी से प्रभावित हो सकता है। माता–पिता के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे बच्चे के व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों का निरीक्षण करें। माता–पिता निश्चित रूप से बच्चे से उन समस्याओं के बारे बात करने का प्रयास कर सकते हैं, जिनका वह सामना कर रहा है। लेकिन कभी–कभी बच्चे अपने माता–पिता के सामने खुलने से डरते हैं, इसलिए बाल परामर्श की आवश्यकता होती है। बाल परामर्शदाता के पास बच्चे के साथ जुड़ने और उनकी कमजोरियों एवं समस्याओं को खोजने के अपने तरीके हैं। बाल परामर्शदाता समस्या का समाधान करने और उन्हें हल करने का सही तरीका जानते हैं।

3.3 बच्चों से जुड़े मुद्दे

बाल परामर्श के समय परामर्शदाता के सामने विभिन्न प्रकार की समस्याएँ एवं चुनौतियाँ आती हैं जिनकी पहचान करना आवश्यक है। ऐसे में बच्चों से जुड़े विभिन्न मुद्दों की जानकरी होना परामर्शदाता के लिए महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

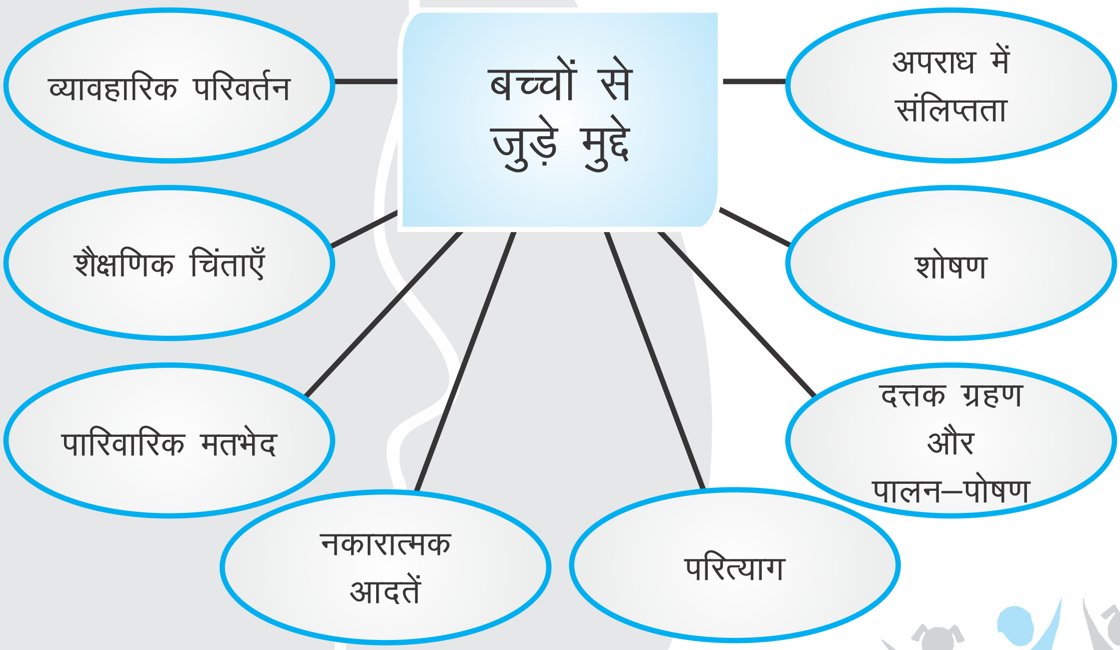

1. व्यवहारिक परिवर्तन

बच्चों में अकारण ही चिड़चिड़ापन रहना या बैचेनी महसूस करना कोई आम बात नहीं है। हालांकि किशोरावस्था में बच्चे अक्सर ऐसा मानसिक व शारीरिक बदलाव के चलते अनुभव करते हैं। ऐसे में एक बाल मनोवैज्ञानिक बच्चे के मन को समझ कर उसकी चिन्ताओं व व्यवहार में परिवर्तन का कारण पता लगा सकता है तथा बच्चे के लिए बेहतर विकल्प व गतिविधियों का चुनाव कर सकता है।

2. शैक्षणिक चिंताएँ

बच्चा कम उम्र में परिवार में रहता है तथा बाद में स्कूल जाना प्रारम्भ करता है। जहाँ उसे स्कूल में कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। स्कूल में कई बार बच्चों को कठिनाईयाँ भी आती हैं जैसे सीखने में अक्षमता, ध्यान का बिखराव, अध्ययन में अरूचि, मानसिक स्वास्थ्य एवं अन्य बच्चों के साथ असहज होना आदि।

3. पारिवारिक मतभेद

घरेलू झगड़े एवं माता–पिता का तलाक बच्चों को बहुत अधिक प्रभावित करता है। परिवार में तलाक से होने वाले परिवर्तन बच्चे के मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक असर डालते हैं व समस्या को बढ़ाते हैं।

4. नकारात्मक आदतें

बच्चों को किसी भी चीज की आदत लग सकती है क्योंकि अपनी प्रयोगात्मक प्रवृति के कारण बच्चा अपना भला–बुरा समझे बिना ही किसी भी काम को शुरू कर देता है। जब इन कामों में मनोरंजन या आनन्द महसूस होता है और फिर वे इनको बार–बार करने लगते हैं जैसे कि छोटे बच्चों को टी. वी. व मोबाईल की लत लगना। वहीं किशोरावस्था के बच्चों को परिवार द्वारा उचित ध्यान व भावनात्मक सहयोग न मिलने से वह मादक पदार्थों के सेवन, अपरिपक्व प्रेम सम्बन्ध, असुरक्षित यौन सम्बन्ध व अवैध कार्यों की चपेट में आ जाते हैं जो कि इनके लिए बहुत दिशाहीन व हानिकारक होता है।

5. परित्याग

परित्याग से जुड़ा डर अकेलेपन से उत्पन्न होता है जो भय या चिंता का एक रूप हो सकता है। परित्याग का डर अक्सर बचपन में हुए किसी नुकसान से उपजा होता है। इस नुकसान का संबंध किसी दर्दनाक घटना से हो सकता है, जैसे :

- माता–पिता की मृत्यु या तलाक के माध्यम से माता–पिता को खोना।
- पर्याप्त शारीरिक या भावनात्मक देखभाल न मिलना।

बचपन के ये शुरूआती अनुभव जीवन में बाद में दूसरों द्वारा छोड़े जाने का डर पैदा कर सकते हैं जो कि आने वाले जीवन को प्रभावित करते हैं।

6. दत्तक ग्रहण और पालन–पोषण

कई बार ऐसा होता है कि पालक, परवरिश में स्वयं के बच्चे व गोद लिए बच्चों में अन्तर करने लगते हैं या फिर गोद लिए बच्चे के पालक–परिवार में समायोजन हेतु कठिनाई आने लगती है। यह एक गंभीर समस्या बन जाती है। ऐसी स्थिति में बच्चे के मन में जटिल भावनाएँ या प्रश्न उठने लगते हैं एवं उनको विचलित करते हैं।

7. शोषण

सामान्यतः किसी व्यक्ति का स्वार्थ पूर्ण लाभ उठाना या उसको तकलीफ पहुँचा कर खुद लाभान्वित होने को शोषण कहा जाता है। बच्चों का फायदा उठाना व उनको किसी प्रकार की हानि पहुँचाना बाल शोषण के दायरे में आता है। इसके कई प्रकार हैं :–

- शारीरिक शोषण : बच्चे के साथ परिवार, स्कूल या और कोई जगह लोगों द्वारा मार–पीट, खाने में कमी या शारीरिक रूप से आघात पहुँचाना।
- मानसिक व भावनात्मक शोषण : बच्चे के साथ लगातार रूप से डाँट व अपमान जनक तरीके से व्यवहार करना, बच्चे की काबिलीयत पर संदेह करना व अपशब्द कहना। बच्चे को प्यार, गर्मजोशी व सुरक्षा की जरूरत होती है, वहीं भावनात्मक शोषण में उसे इसका विपरीत देखने को मिलता है।
- सामाजिक शोषण : जब बच्चे के निवास स्थान पर रहने वाले लोग व उसके साथ के बच्चों द्वारा सामूहिक रूप स गलत तरह से बात या व्यवहार करना।
- यौन शोषण : बच्चे के साथ यौन गतिविधि यौन संतुष्टि के लिए करना। अभी के समय में यह एक गंभीर व महत्त्वपूर्ण मुद्दा है, जहाँ बच्चों के साथ बहुत ज्यादा इस तरह की आपराधिक घटनाएँ हो रही हैं।

8. अपराध में संलिप्तता

किशोरावस्था में बच्चे अलग–अलग कार्य करने की इच्छा रखते हैं तथा करने भी लगते हैं, जिसमें कई व्यवहार सामाजिक व कानूनी दृष्टिकोण से ठीक नहीं होते जैसे कि चोरी, मारपीट, हत्या, अभद्र व्यवहार एवं यौन शोषण आदि। कम उम्र में बच्चे जागरूकता की कमी, डर, भोलेपन आदि कारणों से अपराधों में संलिप्त हो जाते हैं।

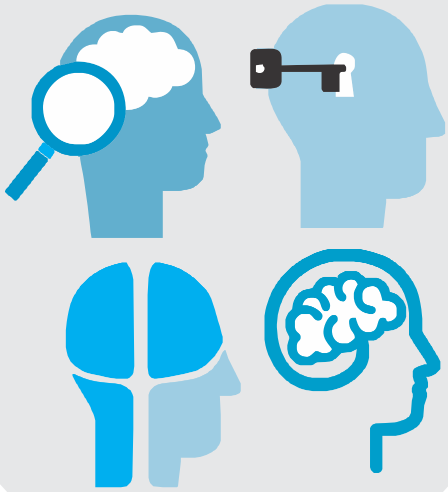

बाल परामर्श में परामर्शदाता की भूमिका

Role of Counsellor in Child Counselling

बाल परामर्शदाता की भूमिका

बच्चे के प्रति | परिवारजनों के प्रति

- परामर्शदाता बच्चे की शारीरिक व मानसिक स्थिति को समझता है तथा अवलोकन करता है।
- परामर्शदाता सदमें की अवस्था से बच्चे को बाहर निकालने का प्रयास करता है।
- परामर्शदाता बच्चे के विकास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करने वाले मुद्दों पर काम करता है।
- परामर्शदाता उन व्यवहार सम्बन्धी मुद्दों का पता लगाता है व उन पर काम करता है जो मुख्य रूप से बच्चे की दैनिक गतिविधियों में बाधा डालते हैं।
- परिवार के अन्य सदस्यों से बात करता है, तथा घर में बच्चे के साथ कैसे व्यवहार हो रहा है एवं घटना के बाद क्या होना चाहिए? पर बात करता है।
- परिवार वालों से बच्चे की गतिविधियाँ तथा व्यवहार का पता करता है।
- माता पिता को बच्चों के लिए सकारात्मक व विकासात्मक वातावरण बनाने में मदद करता है।
- बच्चा फिर से अपने परिवार व समुदाय में घुल मिल सके तथा सामान्य जीवन जीने की ओर बढ़ सके, पर जोर देकर बात की जाती है।
- बच्चे के आत्मविश्वास में वृद्धि एवं संभावित चुनौतियों से बाहर निकलने के लिए तैयार करता है।

परामर्श में पूछेजाने वाले प्रश्नों के प्रकार

Types of Questions asked in Counselling

दो प्रकार

ओपन एंडेड प्रश्न (Open- ended Questions)	क्लोज़ एंड्रेड प्रश्न (Close-ended Questions)
• इसमें प्रश्न कैसे, बताओ, समझाओ आदि शब्दों से शुरू होते हैं। • यहाँ प्रश्न का जवाब हाँ/ना में नहीं देकर विवरण में दिया जाता है। • पहले प्रश्न के जवाब आने के बाद आगे अन्य प्रश्नों का निर्माण करने की संभावनाएँ खुल जाती हैं। • इनका प्रयोग परामर्श में विवरणात्मक जानकारी लेने के लिए ज्यादा उपयोगी होता है।	• इसमें प्रश्न बहुत छोटी जानकारी जानने के लिए पूछे जाते हैं। • यहाँ प्रश्न का जवाब हाँ/ना या एक दो शब्दों में खत्म हो जाता है। • एक प्रश्न अपने आप में पूर्ण जवाब ले लेता है। • परामर्श में इनका उपयोग जितना कम व आवश्यकता अनुसार किया जाए उतना अच्छा है क्योंकि यह सीमित जानकारी देते हैं।

सुझाव : प्रमुख प्रश्न **(Leading Questions)**

परामर्श में प्रमुख प्रश्नों का प्रयोग लाभदायक नहीं होता है क्योंकि इनमें परामर्शदाता द्वारा पूछे गए प्रश्नों से बच्चे को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में उत्तर देने का संकेत मिल जाता है, इससे बच्चा संकेतों की वजह से परामर्शदाता को गलत व भ्रमित करने वाली जानकारी दे सकता है। इस कारण परामर्श के दौरान प्रमुख प्रश्नों का प्रयोग नहीं किया जाता है क्योंकि इसमें वास्तविकता की जगह गलत जानकारी प्राप्त होने की संभावना बहुत अधिक होती है।

परामर्शदाताओं का प्रशिक्षण
Training of Counsellors

परामर्शदाताओं के प्रशिक्षण में निम्नलिखित पक्ष समाहित किए जाते हैं :–

- किसी भी क्षेत्र में प्रशिक्षण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बाल परामर्शदाताओं को प्रशिक्षण में सिखाया जाता है कि वह बच्चे एवं उसके संबंधियों से किस प्रकार बात करें व व्यवहार करें?
- किस प्रकार के प्रश्न वह बच्चे से पूछ सकते है?
- बच्चे से जानकारी लेने में कैसे मदद मिलेगी?
- बच्चों के अधिकारों के लिए कौनसे कानून हैं?
- बच्चे की मानसिक स्थिति का आकलन तथा उसको परामर्श व थैरेपी द्वारा ठीक कैसे किया जाए?

परामर्शदाताओं के कुछ निश्चित समय अवधि जैसे प्रत्येक वर्ष या 2 वर्ष में एक बार प्रशिक्षण जरूर होने चाहिए जिससे परामर्शदाता भी नई तकनीक, कौशल एवं बदलावों को सीख कर समय के साथ–साथ आगे बढ़ सकें।

यह भी जरूरी है कि परामर्शदाता को बच्चों से जुड़े विषयों की जानकारी हो तथा समसामयिक घटनाओं व समाज से जुड़े मुद्दों की जागरूकता हो इसलिए कान्फ्रेन्स, सेमिनार, वेबिनार तथा अन्य विषय संबंधित कार्यशालाओं में उनकी सक्रिय सहभागिता होनी आवश्यक है।

परामर्शदाता : क्या करें एवं क्या ना करें

Counsellor : Do's and Don'ts

जब परामर्शदाता बच्चे व उसके परिवारजनों से बातचीत करता है तब उसे कई महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए, उनमें कुछ बातें निम्नलिखित हैं :–

क्या करें	क्या ना करें
• बच्चे का अभिवादन करें तथा बच्चे को अपना परिचय दें। • बच्चे को सहज महसूस करवायें। • बच्चे के साथ विनम्र रहें। • बैठक व्यवस्था के दौरान क्या करें : – परामर्शदाता बच्चे को अपने दाईं या बाईं ओर बिठायें। – बच्चे को अपने से अलग कुर्सी पर बिठायें जिस पर वह सहज महसूस कर सके। • बच्चे के साथ परामर्श का कार्य एक ही व्यक्ति करे। • परामर्श के दौरान बच्चे से मौखिक बातचीत को आधार बनायें। यदि बच्चा छोटा या बात करने में सहज	• परामर्श के दौरान बच्चे को बिना छुए बात करें। • परामर्श के दौरान किसी भी प्रकार की बाधा ना उत्पन्न करें और ना होने दें। • बैठक व्यवस्था के दौरान क्या ना करें : – बच्चे को ना ज्यादा करीब बिठायें ना ज्यादा दूर। – बच्चा व परामर्शदाता आमने –सामने ना बैठें। • परामर्श सत्र के समय एक से अधिक परामर्शदाता बच्चे से बात ना करें। • परामर्श के दौरान बच्चे से हो रही बातचीत को उसी समय बच्चे के सामने किसी कागज या मोबाईल फोन पर लिखित दर्ज ना करें।

क्या करें	क्या ना करें
नहीं हो रहा है तो खिलौने, कहानी एवं चित्रों का सहयोग ले सकते हैं। • परामर्श के दौरान बातचीत को ऑडियो रिकोर्ड सिर्फ बच्चे, परिजन व संस्था प्रधान की अनुमति ले कर ही करें। • परामर्श के दौरान किसी प्रकार का व्यवधान ना हो तथा वातावरण में शांति बनी रहे। • बच्चे की बात ध्यान पूर्वक सुनें व उस पर विश्वास करें। • बच्चे की बातों को गोपनीय रखें व उसकी निजता के महत्त्व को समझते हुए ध्यान रखें और बहुत जरूरत पड़ने पर मात्र कानूनी संवाद में ही साझा करें। • विस्तृत जवाब देने वाले प्रश्नों का प्रयोग करें जिससे बच्चा निर्भिक व स्वतंत्र रूप से बात कर पाए। • यदि बच्चा बात करने में हिचकिचा रहा है तो उसे बोलने के लिए प्रेरित करें। • बच्चे के परिजनों से बातचीत करते समय उचित भाषा, शांत वातावरण व सम्मान जनक व्यवहार का ध्यान रखें। • जिन विषयों पर बच्चे से बात करनी हो उसके बारे में पहले से पर्याप्त जानकारी जुटा लें। • बच्चे को निर्णय लेने में मदद करें तथा इस प्रक्रिया को सरल व सुगम बनायें। • बच्चे को पर्याप्त, सही व उचित जानकारी ही दें।	• बच्चे से अनावश्यक पूछताछ ना करें। ना हीं उसे एक ही बात को बार–बार दोहराने पर मजबूर करें। • बच्चे को अनावश्यक सलाह ना दें। • बच्चे से संबन्धित जानकारी व बातचीत किसी से भी साझा ना करें। • बच्चे को भाषण ना दें। • बच्चे से क्यों हुआ?, क्या कारण है? आदि प्रकार के प्रत्यक्ष प्रश्नों का प्रयोग ना करें। • बच्चे को बोलते समय ना टोकें, चाहे बच्चा कुछ गलत ही क्यों ना बोल रहा हो। • बच्चे से बात करते समय उसकी तरफ एक–टक ना देखें। • बच्चे के साथ बातचीत करते समय कठिन शब्दों व अभद्र भाषा का प्रयोग ना करें। • बच्चे से बात करते समय फोन पर बात ना करें और ना हीं फोन को प्रयोग में लें। • बच्चे के लिए स्वयं निर्णय ना लें और ना हीं कोई पूर्वाग्रह रखें। • ऐसा कोई वादा बच्चे से ना करें, जो आप पूरा नहीं कर सकते। • बच्चे को परामर्शदाता स्वयं पर निर्भर ना होने दें।

बच्चे

सितारों सी टिमटिमाती आँखों में
ये ख़्वाब, अनेक बुना करते हैं
इस भाग दौड़ भरी दुनियाँ में
मौज–मस्ती को चुना करते हैं....

चाहे कुछ भी बना हो कागज़ पर
ये रंग, अपना मनपसन्द भरते हैं,
और कोई कितना भी समझा ले इन्हें
काम, सिर्फ अपने मन का करते हैं....

खेल–खेल में सुबह और
खेलने में हीं रात करते हैं,
ये बच्चे ही होते हैं....
जो हर बार अनोखी बात करते हैं।

पल्लवी शर्मा

2+2

रिसोर्स इन्स्टीट्यूट फॉर ह्यूमन राइट्स, राजस्थान

932, किसान मार्ग, बरकत नगर, टोंक रोड, जयपुर

सम्पर्क–0141–3532799, 9460387130, 7878055137

E-mail : rihr.rajasthan@gmail.com | Website : http://rihrraj.org